International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN : 2581-9925, Impact Factor: 6.882, Volume 05, No. 04(II), October - December, 2023, pp. 95-101

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 : बहु अनुशासनात्मक और भविष्य के संदर्भ में

माया मधुर*

सार

व्यक्ति और समाज के निर्माण में शिक्षा की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। देश काल में बदलाव के साथ शिक्षा की भूमिका और स्वरूप में अनेक परिवर्तन होते रहे हैं। इन परिवर्तनों के बावजूद यह माना जा सकता है कि शिक्षा की पूरी संरचना और प्रक्रिया कुछ सार्वभौमिक मूल्यों के प्रति समर्पित है। जिसे हमने वैदिक काल से ही पाया और स्वीकारा है। धीरे–धीरे वैदिक कालीन शिक्षा या कहें विद्या परंपरा दुर्बल होती गई और अंग्रेजी उपनिवेश काल तक आते–आते शिक्षा का कायापलट हो गया। जिसमें पाश्चात्य ज्ञान की श्रेष्ठता को स्थापित किया गया। इस कारण हमने अपनी प्राचीन भारतीय शिक्षा प्रणाली को खोया तथा अब शिक्षा बाजारी व उपभोग प्रधान हो गई है अब हमें कुछ नवाचारों की आवश्यकता है ताकि शिक्षा को प्रासंगिक बनाया जा सके ।यह नवाचार व्यक्ति और समाज के जीवन के लिए प्रासंगिक होने चाहिए जो वसुधैव कुटुंबकम जैसे उदार और समावेशी मानसिकता को बताते हैं। भारत की नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 इन्हीं बातों को ध्यान में रखते हुए भारत देश के भविष्य को एक नया आयाम देने के लिए शिक्षा जगत में आमूलचूल परिवर्तन करते हुए बहु –अनुशासनात्मक और भविष्य परक पहलुओं पर विस्तृत रूप से ध्यान दिया है।

शब्दकोशः *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, वैदिक काल, वसुधैव कुटुंबकम, नवाचार व्यक्ति, समावेशी मानसिकता।*

प्रस्तावना

पूर्वर्ती शिक्षा में परिवर्तन की आवश्यकता क्यों हुई?

- बदलते वैश्विक परिदृश्य में ज्ञान आधारित अर्थव्यवस्था की आवश्यकताओं की पूर्ति करने के लिए मौजूदा शिक्षा प्रणाली में परिवर्तन की आवश्यकता थी।
- शिक्षा की गुणवत्ता को बढ़ाने ,नवाचार और अनुसंधान को बढ़ावा देने के लिए नई शिक्षा की आवश्यकता थी।
- भारतीय शिक्षण व्यवस्था की वैश्विक स्तर पर पहुंच सुनिश्चित करने के लिए शिक्षा के वैश्विक मानकों को अपनाने के लिए शिक्षा नीति में परिवर्तन की आवश्यकता थी।

यह सभी कारण बताते हैं कि शिक्षा जगत में वर्तमान परिस्थितियों, समय काल के अनुरूप व्यापक परिवर्तन की आवश्यकता होने के फल स्वरुप शैक्षिक जगत में परिवर्तन किए किए जाने अनिवार्य हुए।

* असिस्टेंट प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान विभाग, महात्मा गांधी बालिका विद्यालय (पी.जी.) कॉलेज, फिरोजाबाद, उत्तर प्रदेश।

पहले के समय में, हम बंद साइलो माइंडसेट में रहते थे जब शिक्षा सिर्फ एक परिभाषा से ज्यादा कुछ नहीं थी। छम्ब् के साथ हमने एक आदर्श बदलाव देखा। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 'क्या सोचे' के बजाय'कैसे सोचे' पर जोर देती है। वर्तमान समय में सीखने का दायित्व माता–पिता और अभिभावकों के स्थान पर शिक्षार्थियों पर स्थानांतरित हो गया है, जो अपने बच्चों को सीखने के महत्व के बारे में बताएंगे।राष्ट्रीय शिक्षा नीति की शुरुआत के साथ शिक्षा की पूरी अवधारणा में सकारात्मक बदलाव देखा गया है।सीखने के लिए कुछ पूर्व आवश्यकताएं हैं, 3 सी अर्थात जिज्ञासा,साहस और प्रतिबद्धता हमेशा शिक्षार्थी को संपूर्ण और समग्र शिक्षा प्राप्त करने के लिए वांछित साहस और प्रतिबद्धता के लिए प्रेरित करेगी।

शिक्षण के लिए एक बहू अनुशासनात्मक दृष्टिकोण की कमी सबसे महत्वपूर्ण बाधाओं में से एक थी जिसका भारत में आधुनिक उच्च शिक्षा ने सामना किया। मैट्रिक के बाद,छात्र को एक विषय या स्ट्रीम चुनने के लिए कहा गया, जो आम तौर पर उसकी पहली पसंद नहीं थी और जिसे बाद में वह शायद ही कभी बदल सकती थी। लंबे समय तक,भारतीय शिक्षा प्रणाली को कई मोर्चों पर पुनः निर्मित किया जाना चाहिए। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने इन गंभीर कठिनाइयों की पहचान की है जिसके लिए तत्काल कार्यवाही की आवश्यकता है और बहु–विषयक अंतः– विषयक और ट्रांसडिसीप्लिनरी शैक्षिक दृष्टिकोण के माध्यम से मुद्दों को हल करने के लिए एक खिड़की खोली गई है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने ज्ञान सद्भाव और अखंडता सुनिश्चित करने के लिए सभी विज्ञानों में एक समग्र दृष्टिकोण के रूप में अंतर –अनुशासनात्मक शिक्षा का प्रस्ताव दिया है। शिक्षा मानव जीवन में सर्वोपरि है क्योंकि इसमें दुनिया को बेहतर बनाने की क्षमता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 एक व्यापक नीति है जिसका उद्देश्य शिक्षा को और अधिक सुलभ,समग्र, बहु–विषयक और उपयोगी बनाकर शिक्षा में सुधार करना है।21वीं सदी के उत्तर आधुनिक दुनिया में बहु विषयक शिक्षा निर्विवाद रूप से महत्वपूर्ण है। नई शिक्षा नीति 2020 एकीकृत और ट्रांसडिसीप्लिनरी शिक्षा पर बहुत जोर देती है।

उदार ('समग्र और अंतः विषय') शिक्षा, जो विद्यार्थियों को सभी मानव ज्ञान और पूछताछ की अनिवार्य रूप से जुड़ी हुई प्रकृति के प्रति संवेदनशील बनाती है, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का एक महत्वपूर्ण स्तंभ है। छात्र विज्ञान, प्रौद्योगिकी, गणित, उदार कला, मानविकी,भाषा, सामाजिक विज्ञान, व्यवसाय कौशल,नैतिकता और मानव मूल्यों को एक ही समय में बहु– विषयक और समग्र शिक्षा के माध्यम से प्राप्त कर सकते हैं। यह सामान्य विकास की इच्छा रखता है,जिसका अर्थ है कि छात्रों के पास अब उच्च शिक्षण संस्थानों और नेट शुरू किए गए डम्ल्े मैं बुनियादी ढांचे, कुशल शिक्षकों और अन्य सुविधाओं तक पहुंचे जिससे उन्हें विभिन्न विषयों (बहु– विषयक शिक्षा और अनुसंधान) में ज्ञान या क्षमता प्राप्त करने की अनुमति मिलती है।

बहु अनुशासनात्मक और एकीकृत ज्ञान भारतीय और विश्व शिक्षा प्रणालियों के अन्य क्षेत्रों में उपयोग की जाने वाली एक प्राचीन रणनीति है। और उसी प्राचीन रणनीति को ध्यान में रखते हुए इस बहु–अनुशासनात्मक दृष्टिकोण को राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अंतर्गत विशेष रूप से अपनाया गया है। जिससे छात्र वर्तमान परिस्थितियों से अपना सामंजस्य बना सकें और भविष्य में भारत देश के निर्माण में अपना अमूल्य योगदान दे सकें।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के मुख्य उद्देश्य निम्नलिखित हैं:

- **प्रथम उद्देश्यः** सामग्रियों का संरचनात्मक तथा संघटित स्वरूप विकसित करना। यह उद्देश्य शिक्षा पाठ्यक्रमों की ताकत, मानव संसाधन और शिक्षा तकनीक को सुधारने के माध्यम से छात्रों को प्राथमिक और माध्यमिक स्तर पर गहन ज्ञान और कौशल प्रदान करने का लक्ष्य रखता है।
- **द्वितीय उद्देश्यः** समग्र विकास के लिए नैतिकता, आदर्श और आत्मविश्वास को स्थापित करना। इस उद्देश्य के तहत, शिक्षा प्रक्रिया में नैतिक मूल्यों, धार्मिकता, सामाजिक जिम्मेदारी और आत्मनिर्भरता को सम्मिलित किया जाता है। यह उद्देश्य छात्रों के विचारधारा, सामाजिक मूल्यों और नैतिकता को स्थायी बनाने के लिए महत्वपूर्ण है।

- **तृतीय उद्देश्यः** सभ्य समाज के लिए ज्ञानवान और न्यायसंगत समाज के विकास के लिए शिक्षा प्रणाली को सुधारना।
- **चतुर्थ उद्देश्यः** अभिभावकों और समुदाय की सहभागिता को सुनिश्चित करना। यह उद्देश्य प्राथमिक और माध्यमिक स्तर पर अभिभावकों, समुदायों, स्थानीय निकायों, गैर सरकारी संगठनों और अन्य स्थानीय प्रतिष्ठानों को शिक्षा प्रक्रिया में सक्रिय भागीदारी लेने के माध्यम से छात्रों के विकास में सहायता करता है।
- **पंचम उद्देश्यः** शिक्षा प्रणाली को औचित्यपूर्ण और संवेदनशील बनाना। यह उद्देश्य शिक्षा प्रणाली में नवीनतम शिक्षानीतियों, प्रौद्योगिकी और शिक्षा माध्यमों के उपयोग को सम्मिलित करके छात्रों को संवेदनशील और सहज शिक्षा अनुभव प्रदान करने का प्रयास करता है।
- **षष्ठ उद्देश्यः** शिक्षा प्रणाली में व्यापक और संघटित गुणवत्ता सुनिश्चित करना। इस उद्देश्य के तहत, शिक्षा मानकों, मान्यताओं और गुणवत्ता निर्धारण पर जोर दिया जाता है ताकि छात्रों को उच्च गुणवत्ता वाली शिक्षा प्राप्त करने का अवसर मिल सके।
- **सप्तम उद्देश्यः** छात्रों की सभी पहलों को समान रूप से समर्पित करना। इस उद्देश्य के तहत, नागरिकता और मूलभूत योग्यताओं को बढ़ावा देने के लिए सभी छात्रों को शिक्षा प्रदान की जाती है। यह उद्देश्य सामाजिक, आर्थिक, जातिगत और जेंडर समानता को सुनिश्चित करने के लिए छात्रों को संघर्षहीन शिक्षा प्राप्त करने में मदद करता है।
- **अष्टम उद्देश्यः** गुरुत्वाकर्षण, आदर्श और पेशेवर विकास के लिए शिक्षकों की तैयारी में सुधार करना। इस उद्देश्य के तहत, शिक्षा कर्मियों के लिए नवीनतम शिक्षानीतियों, प्रशिक्षण कार्यक्रमों और पेशेवर विकास के लिए सुविधाओं को सुनिश्चित किया जाता है। यह उद्देश्य शिक्षा क्षेत्र में गुरुत्वाकर्षण को बढ़ाने, उच्चतम गुणवत्ता के शिक्षायामकों को प्रोत्साहित करने और शिक्षकों के पेशेवर विकास को समर्थन करने के लिए महत्वपूर्ण है।
- **नवम उद्देश्यः** शिक्षा प्रणाली में नवाचार, नए विचारधारा और तकनीकी उन्नति को प्रोत्साहित करना। इस उद्देश्य के तहत, नवीनतम विचारधाराओं, शिक्षा माध्यमों, प्रौद्योगिकियों और शिक्षानीतियों को अपनाकर शिक्षा प्रणाली में नवाचारिता और तकनीकी उन्नति को बढ़ाने का प्रयास किया जाता है। यह उद्देश्य छात्रों को उच्चतम स्तर की तकनीकी क्षमता, उद्भवित सोच, और संविधानमूलक नवाचार के साथ संपन्न करने के लिए शिक्षा प्रणाली को समर्पित करता है।
- **दशम उद्देश्यः** शिक्षा प्रणाली में इंटीग्रेटेड और समर्थित गणित, विज्ञान, तकनीकी ज्ञान, कला, साहित्य, विचारधारा, सामाजिक विज्ञान, स्वास्थ्य विज्ञान, भाषा और अन्य क्षेत्रों को सम्मिलित करना। यह उद्देश्य एक व्यापक और विस्तृत शिक्षा माध्यम को सुनिश्चित करने के लिए है जिसमें विभिन्न क्षेत्रों की ज्ञान प्राप्ति को सम्मिलित किया जाता है और छात्रों को एक समग्र दृष्टिकोण विकसित करने में मदद करता है।
- **ग्यारहवां उद्देश्यः** शिक्षा प्रणाली में नवाचारिक और उद्भवित माध्यमों का उपयोग करना। यह उद्देश्य नवीनतम शिक्षा तकनीकों, उद्भवित माध्यमों और डिजिटल साधनों का उपयोग करके शिक्षा प्रक्रिया में सुधार करने के लिए है। यह छात्रों को तकनीकी संवेदनशीलता, डिजिटल कौशल और आधुनिकता के साथ समर्पित करने में मदद करता है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का माध्यम विभिन्न शिक्षा संस्थानों, शिक्षा प्रदाताओं, शिक्षकों, अभिभावकों, छात्रों, समुदायों, सरकारी निकायों और गैर सरकारी संगठनों को सम्मिलित करके होता है। इसमें विभिन्न स्तरों के नेतृत्व, संगठनों और व्यक्तियों के सहयोग से नये शिक्षा नीति के लक्ष्यों की उपलब्धि होती है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 छात्रों के भविष्य के संदर्भ में कई तरह से मदद करेगाः

- **सामान्य शिक्षा के लिए सुनिश्चितताः** यह नीति सुनिश्चित करेगी कि सभी छात्रों को संघर्षहीन और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा मिले, जिससे वे भविष्य में सफलता के लिए तैयार हो सकें।
- **गुणवत्तापूर्ण शिक्षा मानकों का स्थापनाः** नई शिक्षा नीति मानकों और मापदंडों का स्थापना करेगी, जो छात्रों को उच्च गुणवत्ता वाली शिक्षा प्राप्त करने का अवसर देंगे।
- सहायता करने के लिए संगठनों और संसाधनों का सुधार करने के लिए राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 निम्नलिखित कार्रवाईयों को समर्पित हैरू
- **शिक्षा संस्थानों के सुधारः** नीति शिक्षा संस्थानों को सुधार करने के लिए संबंधित नीतियों, मानकों और मापदंडों का निर्धारण करेगी। यह संगठनों को अधिक आधुनिक, संरचित और गुणवत्तापूर्ण बनाने में मदद करेगी।
- **शिक्षा सामग्री का सुधारः** नीति छात्रों के लिए उपयोगी, उच्चतम गुणवत्ता वाली और नवीनतम शिक्षा सामग्री का विकास करने के लिए प्रोत्साहित करेगी। यह शिक्षा सामग्री की उपलब्धता, पहुंचिता और संगठन को सुधारेगी।
- **शिक्षा प्रशिक्षण कार्यक्रमों का विकासः** नीति शिक्षा कर्मियों के लिए पेशेवर विकास को समर्थन करने के लिए शिक्षा प्रशिक्षण कार्यक्रमों के विकास को प्राथमिकता देगी। इसके माध्यम से शिक्षा कर्मियों की क्षमता, कौशल और पेशेवरता को बढ़ाया जाएगा।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 संगठनों के बीच सहयोग को बढ़ाने के लिए निम्नलिखित कार्रवाईयाँ करेगी

- **दूरस्थ और नेटवर्किंगः** नीति संगठनों के बीच दूरस्थ संवाद, विचार–विमर्श और नेटवर्किंग को प्रोत्साहित करेगी। इसके माध्यम से विभिन्न संगठन अपने अनुभव, ज्ञान और संसाधनों को साझा कर सकेंगे।
- **साझा अनुसंधान और विकासः** नीति संगठनों को साझा अनुसंधान और विकास के लिए प्रोत्साहित करेगी। यह संगठनों को अपने अनुसंधान क्षमता को संवेदनशीलता, नवीनतम विचारधारा और सर्वोत्तम अभिकल्पना के साथ बढ़ाने का अवसर देगी।
- **पाठ्यक्रमों की अद्यतन और संशोधनः** नीति नए पाठ्यक्रम विकसित करने, मूल्यांकन विधियों को संशोधित करने, और शैक्षिक संसाधनों को संशोधित करने के लिए संगठनों के सहयोग को प्राथमिकता देगी। इससे छात्रों को उच्चतम गुणवत्ता के पाठ्यक्रम और संसाधन प्रदान किए जा सकेंगे।

अधिकांशतः राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 छात्रों के भविष्य के संदर्भ में निम्नलिखित तत्वों में मदद करेगी

- **व्यावसायिक प्रशिक्षणः** नीति छात्रों को व्यावसायिक प्रशिक्षण के माध्यम से उच्च शिक्षा और रोजगार के बीच संबंध बनाने की मदद करेगी। यह छात्रों को व्यापारिक और तकनीकी क्षेत्रों में नौकरी और उच्चतर शिक्षा के अवसर प्रदान करेगी।
- **नई शिक्षा प्रौद्योगिकियों के प्रयोगः** नीति नवीनतम शिक्षा प्रौद्योगिकियों के प्रयोग को प्रोत्साहित करेगी, जैसे कि वीडियो कन्फ़्रेंसिंग, अनलाइन शिक्षा प्लेटफ़ॉर्म, और इंटरेक्टिव शिक्षा सामग्री। यह छात्रों को आधुनिक और संबद्ध शिक्षा अनुभव प्रदान करेगी।
- **स्वरोजगार और उद्यमिताः** नीति छात्रों को स्वरोजगार और उद्यमिता की स्थापना करने के लिए संगठनों के साथ सहयोग करेगी। यह छात्रों को अपने आप में काम करने, उद्यमिता और नए व्यापारिक अवसरों को समझने।
- निश्चित रूप से! यहां कुछ अतिरिक्त तरीके दिए गए हैं जिनसे राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 छात्रों को उनके भविष्य के संदर्भ में मदद करेगीरू

- **समग्र विकासः** नीति छात्रों के समग्र विकास पर जोर देती है, जिसमें उनके संज्ञानात्मक, सामाजिक, भावनात्मक और भौतिक पहलू शामिल हैं। इसका उद्देश्य छात्रों के बीच महत्वपूर्ण सोच, रचनात्मकता, समस्या को सुलझाने के कौशल और मूल्यों का पोषण करना है, जो उन्हें उनके भविष्य के प्रयासों के लिए तैयार करेगा।
- **व्यावसायिक शिक्षा और कौशल प्रशिक्षणः** नीति व्यावसायिक शिक्षा और कौशल प्रशिक्षण को मुख्यधारा की शिक्षा प्रणाली में एकीकृत करने पर जोर देती है। इसका उद्देश्य छात्रों को व्यावहारिक कौशल और ज्ञान प्रदान करना है जो वर्तमान नौकरी बाजार के लिए प्रासंगिक हैं, जिससे वे अधिक रोजगारपरक और आत्मनिर्भर बन सकें।
- **प्रायोगिक शिक्षा और इंटर्नशिपः** यह नीति व्यावहारिक गतिविधियों, परियोजनाओं और इंटर्नशिप को बढ़ावा देकर अनुभवात्मक शिक्षा को प्रोत्साहित करती है। यह वास्तविक दुनिया के अनुभवों और व्यावहारिक जोखिम के महत्व पर जोर देता है, जो छात्रों को व्यावहारिक कौशल, उद्योग अंतर्दृष्टि प्राप्त करने और विभिन्न क्षेत्रों की गहरी समझ विकसित करने में मदद करेगा।
- **बहु–विषयक शिक्षाः** नीति बहु–विषयक शिक्षा को बढ़ावा देती है, जिससे छात्रों को विभिन्न धाराओं और विषयों से विषय चुनने की अनुमति मिलती है। यह लचीलापन छात्रों को रुचि के विविध क्षेत्रों का पता लगाने, अंतःविषय करियर का पीछा करने और नौकरी के बाजार की बदलती जरूरतों के अनुकूल बनाने में सक्षम बनाता है।
- **डिजिटल साक्षरता और प्रौद्योगिकी एकीकरणः** नीति डिजिटल साक्षरता के महत्व को पहचानती है और शिक्षण और सीखने की प्रक्रिया में प्रौद्योगिकी को प्रभावी ढंग से एकीकृत करने का लक्ष्य रखती है। यह छात्रों के डिजिटल कौशल को बढ़ाने, ऑनलाइन सीखने के संसाधनों को बढ़ावा देने और अधिक इंटरैक्टिव और व्यक्तिगत सीखने के अनुभव के लिए शैक्षिक तकनीकों का लाभ उठाने पर केंद्रित है।
- **समान अवसर और समावेशिताः** नीति शिक्षा में समान अवसरों और समावेशिता पर जोर देती है। इसका उद्देश्य पहुंच, गुणवत्ता और भागीदारी में अंतराल को पाटना है, यह सुनिश्चित करना है कि हाशिए पर रहने वाले समुदायों और विकलांग लोगों सहित सभी पृष्ठभूमि के छात्रों की शिक्षा तक समान पहुंच हो और उन्हें आवश्यक सहायता प्रदान की जाए।

कुल मिलाकर, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 छात्रों को एक संपूर्ण शिक्षा प्रदान करने का प्रयास करती है जो उन्हें उनके भविष्य के करियर के लिए तैयार करती है, आजीवन सीखने को बढ़ावा देती है, और उन्हें समाज में सकारात्मक योगदान देने में सक्षम बनाती है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में 'बहु अनुशासनात्मक' के मुख्य तत्वों के बारे में बात की गई है। यह तत्व नीति के अंतर्गत निम्नलिखित माध्यमों से प्रकट होते हैं

- **बहु–माध्यमिक शिक्षाः** नीति बहु–माध्यमिक शिक्षा को प्रोत्साहित करती है, जिसमें छात्रों को एक साथ अधिकांशतः दो या तीन विषयों की पढ़ाई करने की सुविधा होती है। इससे छात्रों के पास विभिन्न विषयों में विस्तारित ज्ञान होता है और उन्हें अपनी प्राथमिकताओं और रुचियों के अनुसार अध्ययन का चयन करने का मौका मिलता है।
- **पूर्णतावादी आकलनः** नीति बहु–अनुशासनात्मक आकलन को प्रोत्साहित करती है, जहां छात्रों को अपनी प्रतिभा और प्रवृत्ति के अनुरूप प्रशिक्षण और मार्गदर्शन प्रदान किया जाता है। यह छात्रों को स्वतंत्रता देता है कि वे अपने रुचियों, प्राथमिकताओं और उद्देश्यों के अनुसार अध्ययन करें और अपने द्वारा चुने गए विषयों में माहिर हों।
- **आचार्यकुल प्रणालीः** नीति प्राथमिक और माध्यमिक स्तर पर आचार्यकुल प्रणाली के अवधारणा को प्रोत्साहित करेगी। इसके तहत, छात्रों के संपूर्ण विकास का मूल्यांकन संपन्न किया जाएगा, जिसमें

उनकी अकादमिक प्रगति, कौशल विकास, व्यक्तिगत स्वास्थ्य, सामाजिक और नैतिक मूल्यांकन, और आचार्यकुल गतिविधियों का मूल्यांकन शामिल होगा।

- **फॉर्मेटिव और सम्मिश्र मूल्यांकनः** नीति फॉर्मेटिव और सम्मिश्र मूल्यांकन को बढ़ावा देगी, जिसमें छात्रों की सभी दिशाओं का मूल्यांकन होगा, न कि केवल परीक्षाओं के आधार पर। छात्रों को निरंतर प्रतिक्रिया, प्रोग्रेस रिपोर्टिंग, प्रोजेक्ट्स, विशेष कार्यक्रमों और मूल्यांकन के अन्य तत्वों के माध्यम से स्वयं के प्रगति को समझने का मौका मिलेगा।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के कुछ अतिरिक्त पहलू हैं जो बेहतर सहयोग के लिए संगठनों में सुधार का समर्थन करते हैंः

- **सहयोग प्लेटफार्मः** नीति संगठनों के बीच संचार और सहयोग की सुविधा के लिए ऑनलाइन और ऑफलाइन दोनों सहयोग प्लेटफार्मों के विकास और उपयोग को प्रोत्साहित करती है। इन प्लेटफार्मों में डिजिटल टूल, नेटवर्किंग इवेंट्स, सम्मेलन और फ़ोरम शामिल हो सकते हैं जो शिक्षकों, नीति निर्माताओं, शोधकर्ताओं और अन्य हितधारकों को विचारों का आदान–प्रदान करने, सर्वोत्तम प्रथाओं को साझा करने और शैक्षिक पहलों पर सहयोग करने के लिए एक साथ लाते हैं।
- **साझेदारी कार्यक्रमः** नीति शिक्षा में शामिल विभिन्न संगठनों के बीच साझेदारी कार्यक्रमों की स्थापना को बढ़ावा देती है। इसमें स्कूलों, विश्वविद्यालयों, गैर सरकारी संगठनों, सरकारी एजेंसियों, निजी कंपनियों और सामुदायिक संगठनों के बीच सहयोग शामिल हो सकता है। इन साझेदारियों के माध्यम से, संगठन संसाधनों, विशेषज्ञता और नवीन प्रथाओं को साझा कर सकते हैं, जिससे शैक्षिक परिणामों में सामूहिक सुधार हो सकता है।
- **व्यावसायिक विकास के अवसरः** नीति शिक्षकों के लिए निरंतर व्यावसायिक विकास के महत्व पर जोर देती है। यह संगठनों को प्रशिक्षण कार्यक्रम, कार्यशालाएं और सेमिनार प्रदान करने के लिए प्रोत्साहित करता है जो शिक्षकों और प्रशासकों के बीच सहयोग और ज्ञान साझा करने को बढ़ावा देते हैं। ये अवसर शिक्षकों को अपने कौशल को बढ़ाने में मदद करते हैं, नवीनतम शैक्षणिक दृष्टिकोणों से अपडेट रहते हैं और शैक्षणिक संस्थानों के भीतर सहयोग की संस्कृति को बढ़ावा देते हैं।
- **संसाधन साझाकरणः** नीति शिक्षण सामग्री, पाठ्यक्रम रूपरेखा, मूल्यांकन उपकरण और शोध निष्कर्षों सहित शैक्षिक संसाधनों को साझा करने के लिए संगठनों को प्रोत्साहित करती है। संसाधन साझा करने को बढ़ावा देकर, संगठन एक–दूसरे की ताकत का लाभ उठा सकते हैं, प्रयासों के दोहराव को कम कर सकते हैं और शिक्षा की समग्र गुणवत्ता बढ़ा सकते हैं।
- **मेंटरिंग और सपोर्ट सिस्टमः** नीति संगठनों के भीतर मेंटरिंग और सपोर्ट सिस्टम की स्थापना पर जोर देती है। इसमें नए शिक्षकों को मार्गदर्शन और सहायता प्रदान करना, सहकर्मी से सहकर्मी सहयोग को बढ़ावा देना और सहयोग, टीम वर्क और पेशेवर विकास को प्रोत्साहित करने वाला सहायक वातावरण बनाना शामिल है।
- **मूल्यांकन और प्रतिक्रिया तंत्रः** नीति सहयोग प्रयासों की प्रभावशीलता का आकलन करने के लिए मूल्यांकन और प्रतिक्रिया तंत्र की आवश्यकता पर बल देती है। यह संगठनों को हितधारकों से प्रतिक्रिया एकत्र करने, सहयोगी पहलों की प्रगति की निगरानी करने और निरंतर सुधार सुनिश्चित करने के लिए आवश्यक समायोजन करने के लिए प्रोत्साहित करता है।

कुल मिलाकर, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के लक्ष्यों को प्राप्त करने में संगठनों के बीच सहयोग के महत्व को पहचानती है। सहयोग को बढ़ावा देकर, संगठन अधिक मजबूत और समावेशी शिक्षा प्रणाली बनाने के लिए सामूहिक विशेषज्ञता, संसाधनों और अनुभवों का लाभ उठा सकते हैं।

निष्कर्ष

यह नई शिक्षा नीति 2020 भारतीय मूल्यों से विकसित शिक्षा प्रणाली है जो सभी को उच्च गुणवत्ता शिक्षा उपलब्ध कराकर और भारत को वैश्विक ज्ञान महाशक्ति बनाकर भारत को एक जीवंत बनाए समाज में बदलने के लिए प्रत्यक्ष रूप से योगदान करेगी। इस नीति में परिकल्पित है हमारे संस्थानों की पाठ्यचर्या और शिक्षा विधि जो छात्रों में अपने मौलिक दायित्व और संवैधानिक मूल्य देश के साथ जुड़ाव और बदलते विश्व में नागरिक की भूमिका के उत्तरदायित्व की जागरूकता उत्पन्न करें। इस शिक्षा नीति का विज़न है छात्रों में,भारतीय होने का गर्व केवल विचार में नहीं बल्कि व्यवहार,बुद्धि और कार्यों में भी रहे; साथ ही ज्ञान,कौशल, मूल्यों और सोच में भी होना चाहिए। ताकि हमारे देश के छात्र वैश्विक कल्याण के लिए प्रतिबद्ध होकर सही मायनों में एक योग्य नागरिक बन सकें।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार।
2. राष्ट्रीय पाठ्यचर्चा 2005, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार।
3. आर्थिक–समीक्षा 2018–19, वित्त मंत्रालय, भारत सरकार।
4. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1968 व 1986शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार।
5. डॉ. दीपक, 2018, स्कूल बैग के वजन और अन्य जीवन शैली कारकों की तुलना में पीठ और कंधे के दर्द की व्यापकता–एक महामारी विज्ञान अध्ययन। 7(7)।.

❖◆❖